संयोजक : जय प्रकाश शर्मा

कृत अन्य पुस्तकें

(१) जय देश जय इन्दिरा
(२) अहिंसा परिव्राजक मुनि सुशील कुमार जी
(३) एक जीवन करोड़ तत्व
(४) आत्म संयम
(५) विश्ववन्दनीय मुनि श्रेष्ठ सुशील कुमार और उनका अभय दान
(६) जियो और जीने दो,

एक जीवन : करोड़ तत्व

मुनि श्री सुशील कुमार जी महाराज

प्रकाशकीय

से मैं एक बहुत बड़ा संयोग और शुभयोग हो
ता है कि तीर्थंकर भगवान महावीर के परिनिर्वाण
रोह के सम्पन्न होने के साथ देश में अनुशासन-पर्व
शुभारम्भ हुआ और प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा
ी ने कोटि-कोटि भारतीयों के लिये २० सूत्रीय कार्य-
का श्रीगणेश किया। ऐसे शुभवसर पर जब मुनि श्री
ल कुमार जी विश्व को अहिंसा का संदेश देकर पुनः
त आ रहे हैं तो हम आदरणीय मुनिवर सुशील जी
कृपा से पांच पुस्तकें आपको भेंट कर रहे हैं। इस
क माला के संयोजक देश के जाने-माने राष्ट्रीय उप-
न्यासकार श्री जय प्रकाश शर्मा हैं। इन पुस्तकों के
आवरण चित्री श्री सुबोध मिश्रा हैं। समस्त मित्रों के
के सहयोग से ये पुस्तकें उस पुण्य भूमि को समर्पित हैं
जहां राम, कृष्ण, महावीर, महात्मा गांधी, मुनि सुशील
कुमार और देश-गौरव प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा
गांधी के साथ-साथ हम सब ने जन्म लिया।

नरेश चन्द जैन
अध्यक्ष
कमला पाकेट बुक्स
५६ – शीश महल, मेरठ

एक अरसे से विदेशी धार्मिक-संस्थाओं और विश्व धर्म संगम के विदेशी प्रतिनिधियों का यह आग्रह था कि मुनि श्री विदेश यात्रा पर आयें और जीवन के यांत्रिकता से ऊबे, मनुष्य के वास्तविक रूप की तलाश में भटक रहे पश्चिमी लोगों को मार्ग दिखायें। फिर विश्व धर्म संगम के संस्थापक, अध्यक्ष होने के नाते विदेशों में इसके कार्य को अधिक विस्तृत रूप देने की दृष्टि से यह यात्रा और भी आवश्यक थी। वस्तुतः भगवान महावीर के २५०० वें निर्वाणोत्सव वर्ष में यह यात्रा प्रभु के प्रति वास्तविक सच्ची श्रद्धांजली थी।

लगभग साढ़े तीन हजार वर्ष के जैन धर्म के इतिहास में यह एक चौंका देने वाली घटना थी कि एक जैन संत वाहन का प्रयोग करके विदेश जा रहे थे। पर, वस्तु स्थिति के मर्म को जानने वाले उनकी इस यात्रा के औचित्य और महत्व को जानते थे। यही कारण था कि आचार्य देश भूषण जी, आचार्य तुलसी जी, उपाध्याय विद्यानन्द जी, पंजाब के श्री विमल मुनि जी और मुनि नेमिचन्द जी तथा अनेक संतों ने खुले रूप में उनका समर्थन किया। उन्हें स्नेह, सहयोग और शुभ कामनाएं प्रदान कीं। वर्तमान समय में विज्ञान और धर्म को समन्वित होकर चलना होगा। मुनि श्री की यह मान्यता के अनुरूप ही यह यात्रा थी।

विरोध करने वाले जान चुके थे कि वे विरोध मात्र कर रहे हैं। न तो श्रद्धालु धर्म प्रिय जनता ही उनके साथ है, न ही विवेचन विश्लेषात्मक दृष्टि वाले प्रखर बुद्धिजीवी।

भारतीय संघ सदस्यों द्वारा दिनांक ८-५-७५ को
लोकसभा में मुनि श्री सुशील कुमार जी
म० सा० को निम्नलिखित अभि-

उनकी इस विदेश यात्रा को विवेकानन्द और महात्मा गांधी की परम्परा से जोड़ा।

विदुषी डा० सरोजनी महिषी ने अपने विद्वत्तापूर्ण भाषण में मुनि श्री सुशील कुमार जी को क्रांतिकारी मुनि की संज्ञा देते हुये कहा, 'धर्म की सच्ची भावनाओं को देश और काल की सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता। ऐसा करना संकुचित दृष्टिकोण होगा। मुनि जी जब आध्यात्मिकता की ऊंची उड़ान भर सकते हैं तो विमान की उड़ान भरने में क्या दोष है? जबकि उनकी यात्रा का उद्देश्य महान् है और उससे विदेशों में भारतीय संस्कृति का मुख उज्जवल होगा।' साहु शांति प्रसाद जैन ने आशा प्रगट की कि मुनि जी की इस यात्रा से विदेशों के लाखों लोगों का भला होगा।

समस्त अभिवादनो, सद्भावनाओं, शुभ मंगलकामनाओं का उत्तर देते हुये मुनि श्री सुशील कुमार जी महाराज ने कहा कि 'मैं विश्व में आध्यात्मिक क्रांति लाना चाहता हूं। मेरा उद्देश्य विभिन्न धर्मों में समन्वय और सद्भावना पैदा करना है। उन्होंने कहा—विश्व में शांति लाने के लिये राजनैतिक संधि समझौते बहुत हो चुके हैं। अब समय आ गया है कि आध्यात्मिक माध्यम से विश्व में शांति का प्रयास किया जाये। सत्य और अहिंसा के सारी दुनिया में प्रचार से ही शांति कायम हो सकती है।

मुनि जी ने विश्वास दिलाया कि विदेश यात्रा में प्रतिनिधि-मंडल का हर सदस्य एक विशिष्ट आचार–संहिता का पालन करेगा। और पूरी कोशिश करेगा कि इस यात्रा से भारत का गौरव बढ़े। इस अवसर पर स्वामी चिदानन्द जी महाराज का

आरम्भ हुआ। जब आपने अमेरिका की परम भौतिक वैभवमयी धरती पर पदार्पण किया। यह शहर था—लॉस एंजलस। तीन दिन के यहां प्रवास में मुनिश्री के सम्मान में वहां की जैन इन्टर-योग इंस्टीट्यूट, वेदांत सोसायटी शेक आश्रम, योगी भजन आश्रम तथा अन्य योगाश्रमों में समारोह किये गये। तथा योग सहित आध्यात्मिक के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत चर्चाएं की गई। इन योगाश्रमों के छात्र–छात्राओं ने मुनिश्री से जैन योग तथा जैन दर्शन के संबंध में विभिन्न जिज्ञासात्मक प्रश्न पूछे। लॉस एंजल्स में मुनिश्री ने 'जैन केन्द्र' तथा 'विश्व धर्म संगम' की शाखाएं स्थापित कीं।

27 जून से न्यू मेक्सिको में शुरू होने वाली 'दी यूनिटी आफ मैन'—(मानव एकता) कांग्रेस में भाग लेने के लिये मुनि 26 जून को यहां पहुंचे। एयर-पोर्ट पर प्रख्यात भजन योगी के शिष्यों ने आपका हार्दिक स्वागत किया। मुनिश्री को वहां पृथ्वी की सतह से 9 हजार फुट ऊंची सुरम्य पहाड़ी 'पिकमेली' पर बने भवन में ठहराया गया। श्री भजनयोगी के अमेरिकी शिष्यों ने विभिन्न सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किये। 'दी यूनिटी आफ मैन' कांग्रेस में मुनिश्री के प्रभावशाली भाषण हुये। उन्होंने नवकार-मन्त्र तथा जैन स्तोत्र सुनाकर जैन धर्म के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत चर्चा की। श्री भजन योगी के सहयोग से मुनि जी ने भगवान महावीर की 25 वीं निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष में 3 नवम्बर को 'अहिंसा दिवस' मनाने तथा 8 दिसम्बर को गुरु तेग बहादुर त्रिशाब्दी दिवस मनाने विषयक प्रस्ताव प्रस्तुत किया जो भारी करतल ध्वनि के बीच पारित किया गया।

इसके बाद डेनवार होते हुये मुनिश्री 2 जुलाई, 1975 को मियामी पहुंचे। वहां के 'मियामी महिला क्लब' में प्रेरणात्मक

के ही फोरेस्ट रिसर्च हास्पिटल के एक विशेष निमन्त्रण पर मुनि जी वहां पधारे। अस्पताल में एक मशीन स्थित है। जो व्यक्ति की मानसिक एवं शारीरिक शक्ति को प्रदर्शित करती है। मुनिश्री जब इस मशीन (मानसिक व शारीरिक परीक्षक) 'टेस्टिंग आफ माइंड एण्ड बोडिली वायब्रेशन' पर बैठे तो सुई एकदम 120 की अधिकतम संख्या पर पहुंच गई। जिसे देखकर वहां उपस्थित लोगों ने दांतों तले उंगली दबा ली। मुनिश्री इस प्रदर्शन से अस्पताल के डायरेक्टर डा० गोरिन स्क्वायर गदगद हो गये और उन्होंने इस विद्या को सिखाने का आग्रह किया।

अस्पताल के अधिकारियों और कर्मचारियों के विशेष आग्रह पर मुनिश्री ने एक विशेष मानसिक स्थिति 'सेमी-ट्रान्स' में स्थित होकर अपने शरीर के विभिन्न अंगों के तापमानों में आश्चर्यजनक फर्क करके दिखाया। उन्होंने समाधिस्थ अवस्था में ही वहां उपस्थित लोगों की मनः स्थितियां को भी ठीक ठीक बतला दिया।

इसी रोज रात्रि को शिकागो की 'नार्थ-वेस्ट यूनीवर्सिटी' ने मुनिवर के प्रवचन का आयोजन किया। प्रवचन के बाद उन्होंने जिज्ञासु श्रोताओं द्वारा मन, इन्द्रिय और आत्मा आदि के सम्बन्ध में पूछे गये विभिन्न प्रश्नों के तर्क सम्मत उत्तर दिये। मुनि श्री ने शिकागों के डा० के० सी० जैन को वहां स्थापित विश्व धर्म संगम की शाखा का संयोजक मनोनीत किया।

12 जुलाई को मुनिजी ने क्लीवलैंड स्टेट यूनिवर्सिटी में महत्वपूर्ण प्रभावशाली भाषण दिया। 14 जुलाई को प्रो० चितरंजन के घर हुई बैठक में एक अमेरिकी महिला को विश्व

धर्म संगम का संयोजक बनाया गया।

डैट्रायट से 'इन्टरनेशनल इंस्टीटयूट' में 15 जुलाई को बोलते हुये मुनिश्री ने कहा 'सभी धर्मों' में सत्य मौजूद है। जब सभी धर्म एकत्र हो जायेंगे तो वे अधर्म के विरुद्ध एक बड़ी शक्ति बन सकेंगे। वास्तविक लड़ाई धर्म और धर्म के बीच नहीं, धर्म और अधर्म के बीच है। डेट्रयाट यूनिवर्सिटी में भी मुनिश्री का प्रवचन हुआ। उन्होंने यहां आवाह्यन किया कि विभिन्न धर्मों के लोग विभिन्न धार्मिक पर्व एक साथ मनाएं।

'नार्थ अमेरिकन वेजिटेरियन सोसायटी' द्वारा 16 से 28 अगस्त, 1975 तक आयोजित 'विश्व शाकाहार सम्मेलन' में मुनिश्री सुशील कुमार जी ने बोलते हुये कहा कि जब तक पशुओं का मांस और रक्त मनुष्य की शिराओं में बहता रहेगा, तब तक उसमें मनुष्यता आ नहीं सकता। धरती को स्वर्ग बनाने याने विश्व शांति का मार्ग तब तक प्रशस्त नही हो सकता। अतः यह आवश्यक है कि मनुष्य मांसाहार छोड़ दे।

ओटावा में 'वर्ल्ड पार्लियामेंट आफ रिलींजन्स' में अमेरिका के बारे में बताते हुये मुनिश्री ने कहा—यहां वैज्ञानिक पद्धतियों, तकनीकी ज्ञान तथा भौतिक कामनाओं ने बहुत प्रगति की है। लेकिन विज्ञान का धर्म के साथ समन्वय हुये बिना मनुष्य राक्षस बनकर एक दूसरे से लड़ने-भिड़ने लगेगा। अतः वर्तमान युग में धर्म स्थानों को प्रयोगशाला तथा प्रयोगशालाओं को धर्म स्थान बना देना चाहिये।

मुनिजी के सानिध्य में जैन धर्म के पवित्र पर्युषण शिकागो में मनाये गये इस अवसर पर मुनिश्री के केश लोच का दृश्य शिकागो निवासियों ने आश्चर्य से देखा यही कार्यक्रम वहां के

टेलीविजन पर भी दिखाया गया। पर्यूषण पर्व के दौरान मुनि जी ने विभिन्न विषयों पर रोचक प्रवचन दिये। शिकागो के ही 'इन्डियाना राज्य' में आपने छात्र-छात्राओं को जैन योग एवं वीतराग मुद्रा की क्रियाएं सिखायी तथा लुजिनाम यूनिवर्सिटी में 'अहिंसा' पर भाषण दिया।

विदेशों में मुनि श्री के त्याग, ज्ञान-प्रवचनों आदि से आकर्षित होकर अब तक सैकड़ों व्यक्ति जैन धर्म ग्रहण कर चुके हैं। सम्भवतः वहां के लोगों की आध्यात्मिक रुचि को देखते हुये ही मुनिश्री ने एक भाषण में उद्घोषणा की कि अगले बीस वर्षों में अमेरिका विश्व का सबसे बड़ा योग केन्द्र होगा।

3 नवम्बर 1975 को न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र संघ के सभागार में भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के संबंध में एक विशाल सभा का आयोजन किया गया। अमेरिका के प्रतिष्ठितगण मान्य व्यक्तियों ने इस समारोह में भाग लिया।

सभा में भाषण देते हुये मुनिश्री ने सभी धर्मों के लोगों को एकता और अहिंसा के मार्ग पर चलने को कहा। उन्होंने लोगों से 'जियो और जीने दो' का सूत्र अपना लेने को कहा। उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि अमेरिकी जनता आध्यात्मक में रुचि लेने लगी है। वह यह अनुभव करने लगी है कि विज्ञान के साथ आध्यात्मक का समन्वय होने पर ही मानव का कल्याण हो सकेगा। इसके बाद ही संयुक्त राष्ट्र संघ में विश्व धर्म संगम कार्यालय स्थापित किया गया।

यह एक आश्चर्यजनक सुखद तथ्य है कि अमेरिका के 15 राज्यों में महावीर केन्द्रों की स्थापना करने का प्रयास चालू है। प्रेरणा और बोध के लिये केन्द्रों में भ० महावीर की मूर्तियां

एवं स्तूप स्थापित किये जायेंगे। मुनिश्री की ही प्रेरणा से न्
यार्क में श्री उदय चन्द जैन 'जैन आश्रम' की स्थापना की
निश्चय ही एक प्रशंसनीय कार्य है। मुनिश्री के प्रवचनों
प्रभावित होकर विदेशों के लगभग पाँच सौ नर-नारियां ज
दीक्षा ले चुके हैं। तथा मुनिजी के सत्प्रयासों के फलस्व
लगभग एक मिलियन लोग शाकाहारी बन चुके हैं।

अमेरिका के यहां प्रेषित एक वक्तव्य में मुनिजी ने व
'मैं साधु की मर्यादा का पालन करते हुये अहिंसा को वि
व्यापी बना दूंगा। उन्होंने आगे कहा कि साधु को सेवक ह
चाहिये, न कि विक्रेता।' उन्होंने उन लोगों की आलोचना
जिन्होंने धर्म को रूढ़ि बना दिया है। उन्होंने वक्तव्य में
कि अमेरिका के लोग जिस कार्य को करने लगते है असाधा
रूप से करते हैं।

एक विदेशी पत्र को दी गई भेंट वार्ता में योग पर
करते हुये मुनिश्री ने बताया कि, योग साधना के द्वारा धा
एकता स्थापित की जा सकती है। क्योंकि इससे ईसा, महाव
बुद्ध जैन महान तपस्वियों के अनुभव हमें मिलते हैं।' उ
बताया कि 'आलौकिक शक्ति' से सम्पर्क करना किसी
विशेष की बपौती नहीं है। मुनिश्री ने योग को मस्तिष्क
मित्र बताया।

एक अन्य अमेरिकी पत्रिका को दिये गये वक्तव्य में
जी ने कहा, वर्तमान विज्ञान टेक्नोलोजी मानव की समस
हल करने में समर्थ नहीं है। सत्य सनातन है। अतः यदि
को निराशा से बचाना है तो विज्ञान और धर्म को समा
होकर चलना होगा।

लोगों को उनका विरोध न करके वस्तु स्थिति की विकटता और उनकी भावना की महत्ता को समझते हुए उनका साथ देना चाहिये ।

श्री मर्धा जैन ने कहा कि प्रायश्चित्त मुनि श्री को नहीं करना है, बल्कि उन्हें करना है जिन्होंने इस महान कार्य का विरोध किया था ।

बम्बई के श्री मालवार ने बताया कि मुनि श्री ने विदेशों मे पर्युषण पर्व के अवसर पर दिये थे । उन्होंने बताया कि मुनिश्री के प्रवचनों से विदेशों में रह रहे जैन लोगों में जो धर्म को भूले बैठे थे धर्म सम्बन्धी नवजागरण का प्रस्फुटन हुआ है ।

सभा की अध्यक्षता करते हुए पद्म श्री प्राणी मित्र सेठ आनन्द राज सुराणा ने इस बात पर अति हर्ष प्रकट किया कि मुनिश्री ने भ० महावीर निर्वाण शताब्दी वर्ष में वह कार्य कर दिखाया है जो पिछले २५०० वर्षों में कोई न कर पाया था । वे साधु धर्म की मर्यादा का पालन करते हुए प्रचार के महान् कार्य को कर रहे हैं । उनका विरोध वस्तुतः धर्म प्रचार एवं धर्म के वास्तविक स्वरूप का विरोध करना है । धर्म की शताब्दियों पुरानी भूल को सुधार कर मुनिश्री ने विदेशों में जैन धर्म की जो पताका फहराई है, उसका मूल्यांकन आने वाली पीढ़ी करेगी ।

श्री सुराणा ने कहा कि मुनिश्री ने इस दौरान अहिंसा और शाकाहार के महत्व से लाखों लोगों का आत्मसात कराया है, जो अपने आप में अद्वितीय है ।

श्री सुल्तान सिंह बाकलीवाल ने मुनिश्री के प्रति श्रद्धा वचन प्रकट करते हुए कहा कि हम भारतवासियों के मन में

मुनि जी ने [illegible] की [illegible] है [illegible] की है कि [illegible] विदेशों [illegible] भारत [illegible] द्वारा विदेशों में सम्पूर्ण भगवान् [illegible] का पता लग सके।

इनके पूर्व श्री [illegible] मुनि जी ने भी अपने विचार मुनिश्री की विदेश यात्रा की उपलब्धियों के बारे में प्रकट किये। इसके अलावा श्री टेकचन्द जैन ने अपने विचार प्रकट करते हुए आग्रह किया कि उनकी विदेश यात्रा से सम्बन्धित तमाम शंकाओं का निवारण किया जा सके।

बैठक का सह-संयोजकत्व श्री इन्द्र चन्द कर्नाटिक ने किया।

बैठक के अंत में सर्व सम्मति से एक प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें मुनिश्री सुशील कुमार जी महाराज के महावीर जयन्ती पर स्वदेश पधारने का अनुरोध किया गया।

बैठक में उनके स्वागतार्थ एक समिति गठित की गई जिसमें प्रमुख हैं :—

1- श्री भीखूराम जैन।

2-श्री मति ओम प्रभा जैन

-3 डा० रामानन्द

4- श्री मुल्कराज जैन

5- श्री महताव चन्द

स्वागत समिति सभी जैन अजैन प्रमुख व्यक्तियों से सम्पर्क करके भिन्न भिन्न क्षेत्रों से सदस्यों को सम्मिलित करके एक महासमिति की स्थापना करेगी जो सम्पूर्ण भारत में प्रतिनिधि नियुक्त कर प्रचार कार्य व्यापक रूप से सम्पन्न करेगी।

इस सवाल का जवाब देना हमारे लिये बिल्कुल आसान नहीं। मगर हम सही तौर से जवाब न दे सके और इस रोग का ठीक इलाज न ढूंढ पाये तो धर्मों की कीमत संसार में कम ही होती चली जायेगी। इसके लिये हमें आपस में बैठकर यह समझना है कि हमारे बीच ऊंचे सिद्धान्तों के होते हुए भी झगड़े क्यों हो रहे हैं ?

जहां तक मुझे मालूम है, इन सब झगड़ों का कारण यह है कि जब धर्मों के मूल प्रचारक, पैगम्बर या मसीहा इस संसार में न रहे तो इन धर्मों की बागडोर उनके शिष्यों के हाथ में आई। उन्होंने राजनीतिक और सैनिक लिबास ले लिया और धर्मों के नाम पर अलग-अलग फिरकों और जातियों के बनाने एवं दूसरों को लूटने का काम चलाने लगे। चूंकि इन फिरकों के धर्म आपस में अलग-अलग थे, इसलिये फिरके जो कि अधिक उन्नति पर आये थे, वे एक-दूसरे के नाम पर धावा करने लगे। इसी तरह धर्मों के इतिहास के अन्दर जातियों की साम्राज्य-लिप्सा और लूटने-खसोटने की प्रवृत्ति ने धर्म के इतिहास को खून के धब्बों से भर दिया। इस तरह जिसको हम धर्म का इतिहास कहते हैं, वह सभी माने में धर्म का इतिहास नहीं है। इस इतिहास के बनाने में चाहे किसी भी धर्म का नाम लिया हो, चाहे वह बुद्ध धर्म हो, ईसाइयत हो यहूदी धर्म हो या हिन्दू धर्म हो ये इतिहास इन धर्मों के नाम पर बनाये भले ही गये हों, लेकिन असल में ये इन धर्मों के कब्रिस्तान पर ही गढ़े हैं। अगर ऐसा नहीं तो मुझे यह समझ में नहीं आता कि इन महात्माओं के नाम पर उनके अनुयायियों ने संसार के सारे सारे देशों को फतह करने का विजय-अभियान किस तरह उठाया ? इन देशों में भी पोर्चुगीज, कैथोलिक पादरियों ने लोगों को जबरन ईसाई

सकता है। अगर हम सिर्फ रूप को हम परिष्कार न कर सके तो जिस तरह एक सांप के सामने हजारों भेड़ों का झुंड एक साथ ही भागता है उसी तरह कि भेड़ें भागने पर भी सांप से छुटकारा नहीं पा सकती हैं उसी तरह से धर्म भागने की चेष्टा करते हुए भी भाग नहीं सकेंगे और विज्ञान की हवा एवं विज्ञान की भावना इन सभी धर्मों को एक साथ ही खा जायगी।

तो हमें चाहिये कि हम इन धर्मों के रूप को परिष्कृत करें। इन धर्मों के बनाने के बाद इनमें जो बुराइयां घुसी हैं उनको दूर करें। सबसे पहले हर एक आदमी को चाहिये कि वह अपने-अपने धर्म की बुराइयों को दूर करे तथा अपने-अपने धर्मों के सम्मेलन बुला करके इन धर्मों की बुराइयों पर विचार करें और उनको दूर करने की चेष्टा करें। क्यों कि हर एक धर्म के पैगम्बरों के अपने एक छोटे दायरे रहे हैं। इसलिए हमें चाहिए कि इन पैगम्बरों के आदेशों को शिरोधार्य करें, लेकिन उन्हें स्पष्ट रूप से समझने की भी चेष्टा करें। ताकि इतिहास में जो जिम्मेवारी रही है, उसे भी हम समझ सकें। हर एक धर्म के अनुयायी अपने-अपने धर्म सम्मेलन करने पर जिस नतीजे पर पहुंचे, उन नतीजों को फिर दूसरे धर्मानुयायियों के साथ बैठ करके समझने की चेष्टा करें, ताकि हर एक धर्म को यह पता लग सके कि हमें दूसरे धर्म वाले किस नजर से देखते हैं। तब हमारा अहंकार कुछ कम हो जायेगा तथा इतिहास के कुछ और धर्मों की तस्वीर भी स्पष्ट हो जायेगी। दूसरा काम यह होगा कि अलग-अलग धर्मों के आचार्य और अनुयायी एक साथ बैठकर के यह फैसला करें कि एक धर्म का दूसरे धर्मों से किन-किन बातों में मतभेद है और वह मतभेद किस तरह से दूर किया जा सकता है। इस बारे में हमें धर्मों के बीच परस्पर के विचार

ता है। मगर उस विशुद्ध रूप का हम अंगीकार न कर सकें
जिस तरह एक बाप के सामने हज़ारों बेटों का मुंह एक
सा ही लगता है उसी तरह कि बेटे मानने पर भी बाप से
इन्कार नहीं पा सकते हैं उसी तरह ये धर्म मानने की चेष्टा
करते हुए भी भाग नहीं सकेंगे और विज्ञान की दुआ एवं विज्ञान
की भावना इन सभी धर्मों को एक साथ ही ला सकती।

तो हमें चाहिये कि हम इन धर्मों के रूप को परिष्कृत करें।
इन धर्मों के बनाने के बाद इनमें जो बुराइयां आती हैं उनको दूर
करें। सबसे पहले हर एक आदमी को चाहिये कि वह अपने-
अपने धर्म की बुराइयों को दूर करे तथा अपने-अपने धर्मों के
सम्मेलन बुला करके इन धर्मों की बुराइयों पर विचार करें और
उनको दूर करने की चेष्टा करें। क्यों कि हर एक धर्म के
पैगम्बरों के अपने एक छोटे दायरे रहे हैं। इसलिए हमें चाहिए
कि इन पैगम्बरों के उपदेशों को शिरोधार्य करें, लेकिन उन्हें
स्पष्ट रूप से समझने की भी चेष्टा करें। ताकि इतिहास में जो
कलाबाज़ी रही है, उसे भी हम समझ सकें। हर एक धर्म के
अनुयायी अपने-अपने धर्म सम्मेलन करने पर जिन नतीजे पर
पहुँचें, उन नतीजों को फिर दूसरे धर्मानुयायियों के साथ बैठ
करके समझने की चेष्टा करें, ताकि हर एक धर्म को यह पता
लग सके कि हमें दूसरे धर्म वाले किस नज़र से देखते हैं। तब
हमारा अहंकार कुछ कम हो जायेगा तथा इतिहास के कुछ और
धर्मों की तस्वीर भी स्पष्ट हो जायेगी। दूसरा काम यह होगा
कि अलग-अलग धर्मों के आचार्य और अनुयायी एक साथ बैठ कर
के यह फैसला करें कि एक धर्म का दूसरे धर्मों से किन-किन
बातों में मतभेद है और वह मतभेद किस तरह से दूर किया जा
सकता है। इस बारे में हमें धर्मों के बीच पंचशील के सिद्धान्त

ें के नाम पर ही लड़े गये हैं । इसलिए यह बहुत जरूरी है कि धार्मिक साम्राज्यवाद को खतम कर दें । जब सभी धर्म ऊँचे र महान कोटि के हैं, तो मेरी समझ में नहीं आता कि क्यों क धर्म दूसरे धर्म के अनुयायियों को अपने में मिलाने की चेष्टा रता है । अगर समझ-बूझकर कोई एक आदमी एक मजहब से सरे मजहब में जाता है तो यह एक अलग बात है । लेकिन लोभ, लालच से, जोर-जबरदस्ती से, बहकावे से अगर कोई एक धर्म अपना प्रचार करना चाहता है तो वह अधर्म पर ही कुठारा-घात करता है । मुझे इस बात पर गौरव तो अवश्य है कि भारत ने कभी भी धर्म प्रचार करने के लिये तलवार या रुपये पर भरोसा नहीं किया । यह एक बड़ी चीज थी और अगर दुनिया के सारे धर्म इस सिद्धान्त को अपना लेते हैं तो यह संसार के लिये बहुत बड़ी बात होगी । आज अगर चीन पर जर्मनी हमला करता है या चीन हिन्दुस्तान पर हमला करता है तो दुनिया के लोगों को बहुत बुरा लगता है । फिर अगर ईसाइयत इस्लाम पर हमला करती है या इस्लाम हिन्दू-धर्म पर हमला करता है तो यह कैसे बुरा नहीं है? यह मेरी समझ में नहीं आता । ईसा-मसीह और हजरत मुहम्मद इनके बहुत बड़े परिपोषक हैं लेकिन इसके लिये तो ईसाई और मुसलमान बनने की आवश्यकता ही क्या है? महापुरुषों के उपदेशों का तो मैं दूर से ही स्वाद ले सकता हूं जिस तरह कि गुलाब के बगीचे की खुशबू सभी को दूर से ही मिल जाती है । इसी तरह अगर कोई कृष्ण, पातञ्जलि या वेदव्यास के प्रशंसक हैं तो उन्हें हिन्दू बनने की क्या आवश्यकता है, यह मुझे समझ नहीं पड़ता । बहुत से देशों के अन्दर विभिन्न धर्मों के लोग आपस में एक ही साथ खाते-पीते हैं, आपस में रिश्ता कायम करते हैं और एक-दूसरे के देवस्थान को

मजहब यहाँ इकट्ठा होते हैं, वह यहाँ सबसे ऊँचा है तथा उस ऊँचाई को हमें धीरे-धीरे बढ़ते हुए देखना चाहिए, तभी हमारे मनों की गहराई और दीवारें दूर होंगी तथा तभी हम यह मानेंगे कि हम सभी माने में एक-दूसरे की इज्जत करते हैं। अगर किसी धर्म को अपने धार्मिक नियमों के अनुसार अलग बैठ कर खाने का आदेश है तो वह अपना काम एकान्त में बैठ कर कर सकते हैं। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि वे अपने को औरों से महान समझें। इसी तरह अगर कोई किसी अपने रक्त की शुद्धता के लिए अपने अन्दर के रिश्तों में विश्वास करता है तो वह समझ में आता है फिर भी हमें यह भी देखना चाहिए कि एक ही धर्म के अन्दर बहुत-सी जातियां एवं देशों के रक्त मिले हैं और रक्त-शुद्धता का अभिमान किसी भी जगह माने नहीं रखता। इन धार्मिक मतभेदों को हम जब तक ईमानदारी से कम नहीं करेंगे तब तक यह काम अधूरा ही रहेगा और धर्म के लिए भविष्य का मोका बाहर ही रह जायेगा।

धर्म के आपस के झगड़ों को छोड़ कर अगर हम देखते हैं तो हमें मालूम पड़ता है कि धर्म के लिए खतरा दूसरे धर्मों में नहीं बल्कि विज्ञान की भौतिक प्रवृत्ति में है। मैं इस बात से सहमत नहीं हूं कि धर्म को समाजवाद या साम्यवाद से कोई बड़ा खतरा है। लेकिन मैं इन बातों को जरूरी मानता हूं कि मनुष्य की विज्ञान के रूप में जो बढ़ती हुई शक्ति है मनुष्य पर जो उसका नशा चढ़ता जा रहा है उससे धर्म को अवश्य खतरा है। आज मनुष्य को विज्ञान की बदौलत कुछ शक्ति मिली है, कुछ ज्ञान बढ़ा है एवं कुछ उत्पादन करने की शक्ति बढ़ी है तथा सोचने की शक्ति में भी वृद्धि हुई है। अगर इस बढ़ी हुई

क्ति को मनुष्य रचनात्मक कामों में लगाता है तो संसार के लिए सुख-समृद्धि बढ़ेगी। लेकिन अगर इस बढ़ी हुई ताकत को संसार में झगड़ा करने में लगाया और एक-दूसरे से उलझन हुई तो भविष्य के लिए एक महान् खतरा है। यह खतरा क्यों है यह बताने की जरूरत नहीं है। क्योंकि आज संसार का हर एक राजनीतिज्ञ इसी चिन्ता से परेशान है। लेकिन इस बात के लिए भी हमें दुःख है कि अगर मनुष्य की दौलत बढ़ती है तो उसमें अभिमान भी बढ़ता है और अगर उसकी शक्ति बढ़ती है तो उसके पाशविक विचार को भी उत्तेजना मिलती है। अगर बुद्धि बढ़ती है तो मनुष्य उस बुद्धि को दूसरे का शोषण करने के काम लाता है। आज मनुष्य की दौलत, शक्ति और बुद्धि तीनों बढ़ रही हैं। इसका उपयोग अभिमान, क्रूरता या शोषण पर होगा कि नहीं, यही सवाल है। अभी तक जितने संकेत मिलते हैं उनसे यही मालूम पड़ता है कि मनुष्य ने अपनी बढ़ी हुई शक्ति, दौलत और बुद्धि का उपयोग बाहरी तरीकों से ही करने का फैसला किया है। जैसे-जैसे विज्ञान में उन्नति होगी वैसे-वैसे मनुष्य की दौलत, शक्ति और बुद्धि भी बढ़ेगी। इसमें कोई संदेह नहीं है। लेकिन इसका उपयोग अधिक अभिमान, क्रूरता और शोषण प्रवृत्ति में हुआ तो यह बाहरी बात होगी और मनुष्य का अस्तित्व समाप्त होने का एक बहुत बड़ा खतरा पैदा हो जायेगा। इसलिए जहां धर्मों को अपनी बुराईयों से खतरा था वहां आज सब धर्मों को एक साथ मनुष्य की बढ़ती हुई शक्ति से खतरा हो गया है। हम यह नहीं चाहते कि यह शक्ति, दौलत एवं बुद्धि घटे, इसके बढ़ने में ही हमारा फायदा है। फिर भी अगर हम इस शक्ति का उपयोग बाहरी तरीके से

बहुत बड़ी इज्जत करते हैं, यह बड़ी अच्छी चीज है तथा इस चीज को हमें धीरे-धीरे बढ़ते हुए देखना चाहिए, तभी हमारे मनों की दरारें और दीवारें दूर होंगी तथा तभी हम कह सकेंगे कि हम सही माने में एक-दूसरे की इज्जत करते हैं। अगर किसी धर्म को अपने धार्मिक नियमों के अनुसार अलग बैठ कर खाने का आदेश है तो वह अपना काम एकान्त में बैठ कर कर सकते हैं। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि वे अपने को औरों से महान समझें। इसी तरह अगर कोई फिर्का अपने रक्त की शुद्धता के लिए अपने अन्दर के रिश्तों में विश्वास करता है तो यह समझ में आता है फिर भी हमें यह भी देखना चाहिए कि एक ही धर्म के अन्दर बहुत-सी जातियां एवं देशों के रक्त मिले हैं और रक्त-शुद्धता का अभिमान किसी भी जगह माने नहीं रखता। इन धार्मिक मतभेदों को हम जब तक ईमानदारी से कम नहीं करेंगे तब तक यह काम अधूरा ही रहेगा और धर्म के लिए भविष्य का खोका बाहर ही रह जायेगा।

धर्म के आपस के झगड़ों को छोड़ कर अगर हम देखते हैं तो हमें मालूम पड़ता है कि धर्म के लिए खतरा दूसरे धर्मों में नहीं बल्कि विज्ञान की भौतिक प्रवृत्ति में है। मैं इस बात से सहमत नहीं हूं कि धर्म को समाजवाद या साम्यवाद से कोई बड़ा खतरा है। लेकिन मैं इन बातों को जरूरी मानता हूं कि मनुष्य की विज्ञान के रूप में जो बढ़ती हुई शक्ति है मनुष्य पर जो उसका नशा चढ़ता जा रहा है उससे धर्म को अवश्य खतरा है। आज मनुष्य को विज्ञान की बदौलत कुछ शक्ति मिली है, कुछ ज्ञान बढ़ा है एव कुछ उत्पादन करने की शक्ति बढ़ी है तथा सोचने की शक्ति मे भी वृद्धि हुई है। अगर इस बढ़ी हुई

और संसार का विज्ञान भी उपकार नहीं कर सकते। इसलिये संयम, दया, परोपकार, सरलता, दमन, शांति तथा क्षमा आदि दैवी शक्तियों का एकत्रीकरण पहले अपने मन ही में करना पड़ता है। क्योंकि तुम्हारा ध्वंस तुम्हारी विलासता में ही छुपा हुआ है, तुम्हारा कल्याण तुम्हारे ही चरित्र-निर्माण में निहित है, तुम्हारा उत्थान और पतन तुम्हारी ही भावनाओं और आचरणों पर अवलम्बित है। तुम्हीं अपने आप के विधाता हो। शुभ करो, शुभ हो जायेगा। तुम्हें अशुभ से शुभ की ओर तथा शुभ से शुद्ध की ओर प्रयास करना है। यही तुम्हारा स्व-रूप है और इसी उदात्त वृत्ति को अपनाने के लिये सभी धर्मों का बलपूर्वक आग्रह है।

यह मैं धर्म का अध्यात्म पक्ष कह गया हूं। सभी धर्मों ने लोक-मंगल, लोक-कल्याण और लोक-हित को ही अपना एक मात्र उद्देश्य घोषित किया है। आवश्यकता है कि हम अनेकांत की दृष्टि से अखण्ड सत्य का दर्शन करें। शुद्ध दृष्टि का साक्षात्कार करें। विश्व के धर्म उन्हीं के लिये उपादेय और ग्राह्य हो सकते हैं जिनकी दृष्टि सम्यक् है, विचार सम्यक् है। मैं विश्वास करता हूं कि सभी धर्म सापेक्ष दृष्टि से सच्चे हैं, उन्हें झूठा नहीं कहा जा सकता है, हीन नहीं कहा जा सकता है, वह किसी-न-किसी अपेक्षा से इसी परम सत्ता की ओर जाने के लिये आतुर हैं, जिसे धर्म अनेकान्तव्यापक परम सत्य कहा जाता है। गांधी जी ने कहा था कि धर्मनिष्ठा और दिव्यदर्शन दोनों अलग-अलग रूप हैं, उनमें कोई मेल नहीं है। धर्म की आत्मा को

धर्म चाहता है कि मानव की और मानवीय संसार
असुन्दरता धो दी जाये और मानव आसक्तिहीन हो सके, वा
और विचार का अतिक्रमण कर, मौन की भाषा में वाणी
नाद को सुन सके। याद रखिये, मौन ही आत्मा की भाषा
अविरोध प्रवाह है। उसका उद्गम प्रभु-साक्षात्कार से प्रा
होता है। प्रभु स्वरूप हुये बिना प्रभु को पाना असम्भव है।
अपने स्वरूप में लीन होने के पूर्व अपने स्वरूप का प्रेम होन
आवश्यक है। अपने स्वरूप का प्रेम ही ईश्वर में प्रेम है।
प्रभु-भक्ति ही जप-विकारों के शमन का एक उपाय है। स
दुर्वृत्तियों, अनैतिकताओं से अपने को बचाने के लिये सिवा
आनन्द भाव से प्रभु के प्रति आत्म समर्पण करने से श्रेष्ठ कोई
मार्ग नहीं है। आत्मा ही सच्चा गुरु है। वही हमें प्रतिक्षण सत
का साक्षात् शिक्षण देता है जिससे मानव अन्तर्मुखी हो सके,
शान्ति प्राप्त कर सके, भेद से अभेद की ओर, अविद्या से ज्ञान
की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर, धर्मात्मा की, सर्वोच्च
ध्येय-सिद्धि है जिसका शिक्षण सभी धर्मों ने किसी न किसी
रूप में संसार को प्रदान किया है।

सभी धर्मों ने आत्मसमर्पण से अहम्भाव के नष्ट होने का
विश्वास किया है। इसी से मानव का शोक और दुःख, पीड़ा
व्यथा सभी कुछ नष्ट हो जाती है। यहीं से आत्मानुभूति का
पहला आस्वाद प्राप्त होता है। और आत्मानुभूति की शक्ति ही
संसार की सभी गुप्त शक्तियों से बढ़कर है। संकल्प, व्रत, जप,
तप, नमाज उपासना और प्रार्थना सब कार्य उसी शक्ति के
जाग्रत करने के [illegible] करने मात्र हैं। उद्देश्य तो स्वरूप
का बोध ही है, बिना स्वरूप के समझे 'मैं' को पाये, हम अपना

ह बेटा नहीं बेटी है तथा जिस हलवे में घी नहीं वह हलवा हीं मिट्टी है। संसार में सच झूठ के सहारे चला करता है। र्म-अधर्म सत्य और असत्य का विवेक किस प्रकार से कर कते हैं। सन् १९३५ की बात है, इस बीच बहुत से धर्म पैदा ये। जैसे-जैसे प्रोडक्शन बढ़ता गया वैसे-वैसे धर्म भी बढ़ते ये। ये जो नये धर्म बनते हैं इसमें पुरातन अर्थात् पुरानी बातें नहीं रहती हैं लेकिन कभी वे पुरानी ही हो जाती है। मनुष्य का यही भेद है कि नया पुराना किसे कहते हैं? बूढ़ा किसे कहते हैं जो कभी बच्चा होता है, जवानी किसे कहते हैं, जो कभी जाकर नहीं आती। राधास्वामी सम्प्रदाय के विषय में मैं आपसे कुछ कह रहा था। आत्मा को पहचानने के लिये आत्मा को साधने के लिये योग को बहुत बड़ा सिद्धांत माना गया है। यह जो बादाम के ऊपर का छिलका होता है वह तो धर्म का व्यवहार है और जो अन्दर का छिपा हुआ होता है, वह योग है। सब धर्मों का सार योग में भरा पड़ा है। भगवान् ने कहा है कि दर असल अन्दर में योग की सिद्धि जब तक न हो जाय तब तक कल्याण नहीं होता। मूल चीज तो योग ही है। योग से ही आदमी का विकास होता है, आदमी अपना कल्याण कर सकता है। जिस प्रकार दुनिया के लोगों की नींद एक-सी होती है परन्तु जागने में अन्तर होता है। कोई ज्यादा देर तक सोता है, कोई कम देर तक सोता है, कोई शिथिल होता है, कोई फुर्तीला होता है। उसी प्रकार से दुनिया में तमाम धर्म हैं। परन्तु सब धर्मों का मूल अमृत योग है। यही बात है कि बहुत से धर्म प्रवर्तक साधु, सन्यासी, गृहस्थ आदि के रूप में हुये हैं। यहां तक कि बहुत से बाल-ब्रह्मचारी के रूप में भी हुये हैं।

कल्याण मार्ग धर्म-योग

संसार में कल्याण के लिये धर्म से अच्छी कोई नौका नहीं है। वही कल्याणकारी है, उसकी महिमा न्यारी है। कल्याण के लिये धर्म ही एक अच्छा रास्ता है। आदमी को यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि सत् जितना सच है उतना ही गम्भीर है तथा असत् भी सच ही के सहारे पर चलता है। संसार में आजकल इतने धर्म हो गये हैं कि किसको समझा जाये कि यह धर्म सत्य है तथा यह धर्म असत्य है। यह पहचानना बहुत ही मुश्किल हो गया है। हंस में यह शक्ति होती है कि वह नीरक्षीर को अलग कर सकता है। लेकिन अगर आप में भी यह शक्ति है वह ताकत है तो आप सत् और असत् तथा धर्म और अधर्म को पहचान सकते हैं। हीरे की परख कैसे हो सकती है। बात तो सही है, लेकिन सही होते हुये भी आधी सही है आधी झूठ। एक कहानी है कि एक आदमी ने कहा कि महाराज मैं खूब भांग पीता हूं, तो महाराज ने कहा भांग पीना अच्छा नहीं है। आदमी बोल पड़ा कि महाराज आपने क्या कह दिया कि भांग पीना अच्छा नहीं है। अरे जिस बेटे ने भांग नहीं पी, वह बेटा नहीं बेटी है। जिस आदमी ने भांग नहीं पिया वह इन्सान नहीं है। जिस प्रकार से कि जिस हलवा में घी नहीं होता वह हलवा नहीं। उसने एक मसला कहा कि जिस बेटे ने भांग नहीं पी

हमारे चौबीस तीर्थंकरों में कुछ ऐसे थे कि जिनके सैंकड़ों बाल बच्चे थे चक्रवर्ती थे। जिसकी योग वृत्तियां केन्द्रित हो गई है वह माया के बीच में जवान की तरह, पानी में कमल की तरह रहेगा। वह दुनिया में चाहे जहाँ रहे, चिड़िया की तरह रहेगा। उस पर संसार की किसी वस्तु का प्रभाव नहीं पड़ेगा। भगवान् कहते हैं कि यदि साधु आंखें बन्द करके नहीं चलता तो वह माया के फेर में पड़ जाता है। जैसे नाक खुली रहेगी तो सुगन्ध और दुर्गन्ध दोनों आयेंगी। कान खुला रहेगा तो अच्छी तथा खराब दोनों बातें सुनने को मिलेंगी। पति-पत्नि के प्रेम की भी बातें सुनने को मिलेंगी तथा इसी प्रकार दुनिया की तमाम बातें हमें सुनने को मिलेंगी। भगवान कहते हैं कि जो सिद्ध विवेक तथा योग द्वारा चलता है उसके अन्दर दुनिया की बुराइयां कभी नहीं आ सकती। राधास्वामी सम्प्रदाय किस प्रकार बना। राधास्वामी ये बहुत बड़े अफसर थे। वे कोई ऐसी पुस्तक पढ़े जिसके अध्ययन से उन्हें लगा कि श्रुत योग बहुत बड़ा है। अब यह प्रश्न आता है श्रुत योग क्या है। श्रुत योग यह आँखों से किया जाता है। आंखों को मूंद कर बैठ जाओ। आंखों में दर्द होने लगे, धड़कन आने लगे, कोई परवाह न करो। लगातार दो-तीन दिन करते रहो। ऐसे धीरे-धीरे जब आप लगातार कई महीने तक करते रहेंगे तो आपकी यह एक आदत हो जायेगी। आंखों में बिजली के समान तेज आ जायेगा। जिस प्रकार कि स्विच लगाने से बत्ती जलने लगती है उसी प्रकार आंखों में प्रकाश आ जायेगा। आपके सामने मोटर जा रही है, गाड़ी जा रही है सांप जा रहा है, यदि आपकी इच्छा होती है कि हम इसे रोकें तो वह आपके आप ही रुक जायेगा।

तथा नीचे का भी आपका नहीं है। जब यह स्थिति हो जाय
एक काले बिन्दु की कल्पना कीजिये। बहुत ज्यादा जोर
दीजिये, धीरे कीजिये। मगर एक भी इच्छा, कल्पना यदि
तो सब नष्ट हो जायेगा। एक भी सिद्धि होने को नहीं है।
सब दिल की कमजोरियां हैं। जगत् तुम्हारे अधीन नहीं
पर धीरे-धीरे वह अधीन हो सकता है। मन को ट्रेंड करने
भी कुछ समय लगता—है जैसे यदि मोटर सीखना है तो सी
सीखते भी कुछ दिन लगता है। उसी प्रकार मन को ट्रेंड क
में कुछ समय लगता है। जब हमारा मन पक्का हो जायेगा
आप संगीत सुनना चाहेंगे तो आपको संगीत सुनाई देगा। [illegible]
आपकी जो कुछ इच्छा, मनोकामना होगी, वह सफल हो
[illegible] रहेगी। यह [illegible] योग है। मनुष्य भावना का भण्डार (?)
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

तथा नीचे का भी आपका नहीं है। जब यह स्थिति हो जाये तो एक काले बिन्दु की कल्पना कीजिये। बहुत ज्यादा जोर मत दीजिये, धीरे कीजिये। मगर एक भी इच्छा, कल्पना यदि रही तो सब नष्ट हो जायेगा। एक भी सिद्धि होने को नहीं है। यह सब दिल की कमजोरियां हैं। जगत् तुम्हारे अधीन नहीं है। पर धीरे-धीरे वह अधीन हो सकता है। मन को ट्राई करने में भी कुछ समय लगता—है जैसे यदि मोटर सीखना है तो सीखते सीखते भी कुछ दिन लगता है। उसी प्रकार मन को ट्राई करने में कुछ समय लगता है। जब हमारा मन पक्का हो जायेगा तो आप संगीत सुनना चाहेंगे तो आपको संगीत सुनाई देगा। अथवा आपकी जो कुछ इच्छा, मनोकामना होगी, वह सफल होकर ही रहेगी। यह अद्भुत योग है। मनुष्य भावना का भण्डार है। जब उसको एक रास्ता मिल जाता है तो वह समझने लगता है कि यही रास्ता सबसे अच्छा है, दूसरा रास्ता रास्ता ही नहीं है। आनन्द उसी आदमी को प्राप्त हो सकता है जो काम, क्रोध, मोह, माया आदि को त्याग दे तथा व्यभिचारों से दूर रहे। एक आदमी एक महात्मा के पास गया और कहा कि महाराज हमारे अन्दर तमाम व्यभिचार भरे पड़े हैं। महात्मा ने कहा उनको और बढ़ाओ। उन्होंने उसको एक ऐसा आसन बता दिया जिससे कि उसके सब व्यभिचारों का लोप हो गया। कुछ आदमी ऐसे होते हैं, जिनको व्यापार में आनन्द आता है।

धार्मिक सम्प्रदायों में धर्म-ऐक्य

सर्व-धर्म-समभाव, धर्म सहिष्णुता और विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों में परम-ऐक्य का दर्शन भारत में प्रारम्भ से ही दृष्टिगोचर होता रहा है। "एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति"—यह ऋग्वेद के उन ऋषियों की वाणी है—जो सत्य और एक के नाना रूपों के पीछे से एक ही सत् का दर्शन कर रहे थे। मुझे यह गौरव है कि मैं भारत के उन प्राचीनतम धर्मों में से ऐसे धर्म पर विश्वास कर रहा हूँ कि जिस धर्म ने अपने दार्शनिक आधार को अनेकान्तवाद का नाम दिया है। और अहिंसा जैसा उदार सिद्धान्त जिसने सब जीवों का हित और अनेकान्त जैसे समन्वय सत्य का प्रतिपादक सिद्धान्त ही जिसके मूलाधार हैं। जिसकी धारणा यह है कि संसार के सब धर्मों में, सब विचारधाराओं में और सब प्रकार के साम्प्रदायिक दृष्टिकोणों में आंशिक सत्य का दर्शन जो नहीं कर सकता—वह उस धर्म को जानता ही नहीं सकता और उस धर्म का नाम जैन धर्म है। धर्म-सहिष्णुता का भाव ही जैन धर्म की हमारे लिए विशेषता है।

यह वह देश है जहाँ ऋषियों की वाणी मुखरित हुई। योगिराज कृष्ण का गीता संदेश, राम का आदर्श, तीर्थंकर महावीर का त्याग और बुद्ध की करुणा, अनन्त-अनन्त वाणि

प्रभावित हुई। पूर्व के तीर्थंकरो, दक्षिण के ...
उत्तर के संतो ने इस देश की संस्कृति को ...

यद्यपि आज संगठन का युग है किन्तु अर्थ एवं ...
पार के आधार पर खड़े किये गए संगठन ...
लिए लाभदायक सिद्ध नहीं हो रहे हैं। संयुक्तराष्ट्र ...
राष्ट्रीय संगठन संसार की शान्ति का पूर्ण ...
नहीं दे पा रहा और पंचशील तथा बांडुंग सम्मेलन ...
रिक अविश्वास को नहीं धो पारहे—उसका कारण ...
त्व एवं सह-जीवन की भावनाओं को इन संगठनों ने ...
दिया गया किन्तु पीछे जिस आत्मनिष्ठा की एवं ...
आवश्यकता होती है उसको महत्त्व न दिया जा ...
कारण है कि धर्म की इस समता, सह अस्तित्व ...
को राजनीतिक संगठनों ने धर्म से उधार तो लिया ...
आत्मनिष्ठ न बना सके। वर्ग संघर्ष, प्रतिद्वंद्विता और
को यह संगठन मिटा न सके।

इसीलिये धर्म के आधार पर एक ऐसे अन्तर्राष्ट्री...
की आवश्यकता हम महसूस करते हैं—जिसके द्वारा
समाज के आपसी संबन्धों को आत्मनिष्ठ बनाया ...
राजनैतिक स्तर पर यूनेस्को जिस सांस्कृतिक भाव ...
कर रहा है—इस की पूर्ति इस धार्मिक संगठन से की ...
हमारा विश्वास है कि अब वह समय आ गया है जब
मानने वाले लोग अनुन्नत राष्ट्रों की सहायता के लि...
मानस तैयार करें, पारस्परिक संघर्षों को धार्मिक ...
धो दें। भाषा व साम्प्रदायिक संघर्षों को मिटाने के लिये
हो जायें और तमाम पराधीन राष्ट्रों को स्वाधीन ...
सहायक बनें, ऐटम-स्पर्धा को नियंत्रित करने के लिये

धान चलायें, समाज के पुनर्निर्माणार्थ नैतिक सिद्धांतों
ष्ठा से स्थापित करें—जिससे मानव-समाज की
नवीन समस्या का समाधान हो सके और जीवन के
रूप को समुन्नत बना सके। जगत की समस्याओं को
स्तर से हल करने के बहुत प्रयास हो चुके हैं, अब
सा गया है कि जगत की सब समस्याओं को धार्मिक
ात्मिक कसौटियों से कसा जाये और उनका समाधान
। इसके लिये संसार के विभिन्न धर्मों के एक संग
ड़ी आवश्यकता है।

होता है कि जब आज का सुधारवादी किसी धर्म के
बड़ी घृणा से यह कहता है कि—मैं धर्म को कुछ
ा, शास्त्र और तत्त्वज्ञान को स्वीकार नहीं करता,
ा है कि उसकी बौद्धिक अस्मिता इतनी कम हो
क धर्म जैसे अमृत को, अमृत मानने को ही तैयार नहीं
इससे अधिक आज के सुधारवादी की विसंगति क्या हो
?

धार्मिकों के सामने जो सबसे बड़ी समस्या है वह
कता की तो है ही, किन्तु उससे बड़ी बात धार्मिक
सुरक्षित करने की भी है। जिस तरह संसार में कुछ
ंधी लोग धर्म को कट्टरता का रूप देकर उसे असुन्दर
और अशुभ की ओर ढकेल देते हैं—उसके निराकरण
भी समस्या हमारे सामने है। आज हम अपने
र जिस अंधकार को देख रहे हैं—उसे दूर करने का
र्म और विज्ञान और विज्ञान को धर्म का रूप नहीं दे
ब तक हमारी समस्याएं किसी भी तरह सुलझ नहीं

धर्म की उपयोगिता है।

धर्म का अर्थ मन्थन

मनुष्य की अपनी मान्यता अथवा आत्म श्रद्धा ही धर्म
परिपूर्ण अर्थ नहीं बन सकती, हमारा विविक्त सत्य ही अ
तत्व है, यह भी असंगत है। मानव ने आग्रह वश धर्म पर अ
के अम्बार और परिभाषाओं के ढेर लगा दिये हैं, अब भी
की ७०० परिभाषाएं अपना-अपना अस्तित्व रखती हैं, प्रत्ये
धर्म परस्पर में एक दूसरे को अपूर्ण और स्वयं को पूर्ण मान
का हठ पकड़े हुए हैं, यही कारण है—स्वकल्पित अर्थ के आ
के कारण प्रत्येक धर्मों ने जगत के सभी धर्मों से अवांछ
व्यवहार किया है और कहीं-कहीं यह भावना इतनी उद्द
हो गई, जगत के सभी धर्मों का नाश करके स्वधर्म को सत्य
प्रमाणित करने के लिये विध्वंशलीला के अकाण्ड ताण्डव घटि
हो गये हैं। यहां यह याद रखना चाहिए कि जगत में अने
धर्म हैं, उनका अपना-अपना सापेक्ष दृष्टि से महत्व है, उ
योगिता और आवश्यकता है। सभी धर्म दृष्टि विन्दु है अहिं
के साधनों से सत्य की शोध के हिमायती हैं किन्तु उन
योग्यता, सामर्थ्य, दृष्टिकोण पृथक २ है सभी धर्मों का न
करके मानव जाति को एक बाड़े में बन्द करना कभी भी हित
कारक नहीं हो सकता है। सम्भव है अपकर्ष का ही कारण हो
और न ही किसी व्यक्ति को किसी तत्व का नाश करने क
अधिकार है। पिछली शताब्दियों में राम, कृष्ण, महावीर,
बुद्ध, जरथुस्थ, कन्फ्यूशियस लाओत्से, इसा मुहम्मद जैसे अव-
तार तीर्थंकर तथागत तथा पैगम्बरों का मानव दर्शन कर चुका

है वे महामानव थे और वे मानवता के उन्नायक अहर्ता और आत्मा के दिव्य सन्देश वाहक थे। इन सबको धर्म प्रवर्तक कहा जाता है क्योंकि इन्होंने अपने जीवन में आत्म स्वभाव का विकास किया था अपनी आत्म प्रतिकूल प्रवृत्तियों को सब से प्रतिकूल और अभिलषित शाश्वत आत्म अनुकूलताओं को समस्त विश्व के लिये हितावह माना था। 'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषाम् समाचरेत्' यही इनका सार था। अतः धर्म जैसे व्यापक तत्व को हम किसी सीमा अथवा श्रेय प्रेय के पचड़े में नहीं बांध सकते, धर्म का अर्थ मूल में स्वभाव है, सदाचार है, संस्कृति में आदर्श है, और सभ्यता में सद्व्यवहार है, कला और साहित्य के क्षेत्र में श्रेय और अभ्युदय है, सन्तों में सर्वोदय तथा मानस शान्तियों में स्वस्थता है, धर्म के मूल अनेक हैं, तात्पर्य एक ही है कि चैतन्य का धर्म चैतन्य है जिसे हम आत्म स्वभाव कह सकते हैं। भगवान महावीर अरथुस्त्राओ शमो, बुद्ध, ईसामसीह धर्म, वैदिक निर्घोषकरों धर्म कहकर तथा संतों ने धर्म को सहजिक वृत्ति, सत्य संशुद्ध, आध्यात्मिक उत्कर्ष आत्म उन्मुखता तथा आध्यात्मिक अनुभव कह कर इसी लक्षण का बलपूर्वक समर्थन किया है।

धर्म और सिद्धान्त

आत्म स्वभाव के विकास में सभी तत्ववृत्तियाँ एवं धर्म के सिद्धांत बताये गये हैं। धर्म स्वरूप को सुस्थिर करने के लिये जिन आंतरिक दोषों का साक्षात्कार किया गया है, वह हिंसा असत्य, अनाधिकार चेष्टा, व्यभिचार तथा संग्रहवृत्ति आदि ही

[illegible] पर इस प्रकार इसका [illegible] समाधान होगा।

६. भगवान महावीर की देशना के माध्यम [illegible]
था।

झगड़ों के पीछे भी परम्परा है। दिगम्बर सम्प्रदाय के
द्वारा दिव्यध्वनि को स्वीकार करके कहते हैं कि उसमें से
देव [illegible] सब अपने मतलब की समझ लेते हैं। श्वेताम्बर व
द्वारा उपदेश को स्वीकार करते हैं। पर इन मान्यता
भिन्नता से कोई हानि नहीं है। जहाँ प्रेम का अतिरेक होता
जहाँ भावना का अतिरेक होता है—उसे सुनने सुनाने
आवश्यकता नहीं है। उसे वाणी के माध्यम की जरूरत नहीं
भगवान बोलते थे वाणी का अतिशय था। गहराई से समझो
वाणी से या ध्वनि से आप तमाम मतभेद भूलकर उस देश
का ध्यान करिये। उस देशना को समझिये। इसी में कल्या
है।

धर्म के मतभेद भी मिट सकते हैं—जबकि हम उस
आधार बिन्दु को बदल दें। हमारे समन्वय की पृष्ट भूमि ए
होजाय।

दूध मीठा होने पर भी मत भिन्न होते
का झगड़ा है यह झगड़ा मिट सकता है।
लिये भी सहिष्णुता चाहिये।

महावीर स्वामी की पहली देशना व

ओ जैनियों! अहिंसा निष्ट भी
गणना बढ़ाने की दृष्टि से आप यह कहें
का ध्यान वही करते हैं— जिन्हें

लोभ पाप का बाप

कवि कहता है कि ऐ इन्सानों! यदि तुम्हारी मोहब्बत
सच्चा प्यार प्रभु से हो जाता है तो तुम संसार सागर से पार
हो जाओ।

एक उर्दू शायर ने कहा है—

जिन्दगी इश्क के सदके,
इश्क़ ही प्यार हो जाता।
न जाने नाव मझधार में,
ये बेड़ा पार हो जाता॥

कितने सुन्दर शब्द हैं ये। तुम्हारा, तुम्हारी मोहब्बत
मिजाजी न हो। बनावटी न हो। तुम्हारा प्यार संसार की
वस्तुओं पर नहीं होता तो तुम्हारा बेड़ा पार हो जाता।

एक शायर ने फिर कहा है—

मोहब्बत की खुदा तक रिसाई है।
अगर तुम सच समझो तो, मोहब्बत ही खुदाई है।

मोहब्बत की पहुँच खुदा तक है। इस लिए मोहब्बत ही
खुदा और प्रेम स्वयं भगवान है।

प्रेम की शक्ति को जागृत करो। मन्द शक्ति को जगाने

सुरों ने ऋषि के पास जाना स्वीकार किया। कच्छ की खाड़ी के पास अगस्त्य मुनि का आश्रम था—सुर गये और प्रार्थना की कि—

ऋषिराज ! यदि आप कृपा करके समुद्र का जल पी जायें तो राक्षसों को रहने की जगह नहीं मिलेगी और हम उन्हे मार डालेंगे। वैसे हम कमजोर नहीं हैं पर यदि आप उनके रहने का स्थान मिटा देंगे तो हम सुखी हो जायेंगे ।

ऋषि ने कहा हमारा सर्वस्व यदि किसी की रक्षा में काम आ सके तो बड़ी खुशी की बात है। पर लाखों माइल का समुद्र पीना कोई आसान नहीं। फिर भी प्रयत्न करूंगा।

अगस्त्य मुनि ने तीन चुल्लू में सारा समुद्र पी डाला। मगर मच्छ और कच्छ सब बाहर आ गये। फिर क्या था असुरों पर देवों की विजय हो गई।

बुद्धिवादी के लोग कहेंगे—बड़ा भारी गपोड़ा आपने सबके सामने रख दिया। दो लाख मील का समुद्र पिया कैसे गया ?

पुराणों को लिखने वाला व्यास कोई साधारण व्यक्ति नहीं था। बड़ा पंडित, था—इसमें तथ्य भरा हुआ है मैं उनमें से नहीं हूं जो गपोड़ा कह कर छोड़ दें। हम तथ्य को निकालते हैं।

देवा सुर लडे थे। आज भी देवा सुर लड़ रहे हैं। आपमें ज्ञान, सत्य, शांति आदि गुण देवता हैं। क्रोध, मान माया, लोभ आदि अनेक अवगुण जो आपमें भरे पड़े हैं—वे असुर हैं—राक्षस हैं

कहने का तात्पर्य यह कि तृष्णा का समुद्र आकाश से भी ज्यादा विशाल है। यह इतना बड़ा तृष्णा का समुद्र मनुष्य के छोटे से हृदय में रहता है। वहीं समुद्र में क्रोध, मान, माय आदि दुर्गुण रूप राक्षस छिपे रहते हैं। इस समुद्र को शोष करने के लिये आत्मा रूप अगस्त्य ऋषि से प्रार्थना करो द तीन चुल्लु में इस समुद्र का शोषण कर देगा—वे तीन च है— दर्शन और चरित्र।

आत्मिक संयम, शारीरिक संयम और मानसिक संयम तुम्हारे देवता की विजय होगी। तुम में दया करुणा और क ।प्रादुर्भाव होगा। आनंद का स्रोत फूट पड़ेगा। और तुम आत्म कल्याण करने में समर्थ बनोगे।

———

में यहां मनोवैज्ञानिक माना जाता है। साइकोलाजी का विवेच इसी महापुरुष की देन है—वरन तथा आपने फ्रायड इसका मं समाज किया कि हमारे भगवती सूत्र में इस मनोविज्ञान का विवेचन कितना गहन है।

भगवती सूत्र में इन्द्रियां ५ मानी गई है। पांच इन्द्रियों के २३ विषय माने जाते हैं। यह बात जैन का बच्चा बच्चा जानता है। हमारे यहां बचपन से ही यह विज्ञान सिखा दिया जाता है। ढाई हजार वर्ष पहले ही हमारे यहां इस मनोविज्ञान की पूर्ण व्याख्या की जा चुकी है।

कान से हम सुनते हैं। सुनने की ध्वनि दो प्रकार की होती है। काल और अकाल, नाद गुज्जन या ध्वनि केवल १-२ प्रकार की नहीं होती। हम केवल जीव शब्द अजीव शब्द और मिश्र शब्द कहकर श्रोत्रेन्द्रिय के विषय बतला देते हैं। मानाकि शब्द तीन ही प्रकार से उत्पन्न होकर ध्वनित होते हैं। पर—ध्वनियों का कोई प्यार नहीं। प्रत्येक प्राणी की अपनी एक अलग ध्वनि होती है। वीणा के तारों में निराली स्वर लहरी बहती है और सिंह का गर्जन अनोखा गर्जन उत्पन्न कर देता है। ध्वनि विज्ञान में ही सम्पूर्ण जीवन व्यतीत किया जा सकता है।

एक तिनको देखिये और देखिये कि तिनको प्रकार, असंख्य हैं, आप उनके चित्र लेते जाइये और उन्हें समझते जाईये-पार न पाइयेगा। जिन्दगी बीत जायेगी।

चक्षु इन्द्रिय के विषय पर विचार करिये। आप, काला, पीला श्वेत आदि ५ रंग बता देंगे। अधिक कहने वाले इन्द्र धनुप के सात रंग कह देंगे। पर क्या आपको रंगों के इतने से से कथन से संतोष हो जायेगा। चलिये, उद्यान में चलिये और

गुड़ चीनी, दूध, चना, और गेहूं, में अलग अलग मिठास होती है। समुद्र, पहाड़ और कुएं के पानी में अलग अलग होता है। यहां तक कहा अनेक भेद स्वाद के पायगे।

स्पर्शेन्द्रिय के विषय है। पर इनके अंतरंग भेद कितने हैं एक कुएं का स्पर्श भाव इन का क्या वर्गीकरण करेंगे। एक बच्चे को गोद में लेकर जो स्पर्शानन्द आप लेते है उसका क्या नाम देंगे। स्पर्श के कितने प्रकार है। उन्हें हम तालिका द्वारा नहीं बता सकते इनका तारतम्य निकाला नहीं जा सकता।

तो हमारा कहने का तात्पर्य यह है कि केवल २३ विषय कह देने से ही काम नहीं चलेगा। २३ विषय समझने की बात है और उनके अनंत भेद अनुभव का विषय है।

इन पांच इंद्रियों में आंख और कान ज्ञानेन्द्रियां हैं। और घ्राण, जिह्वा और त्वच ये ३ भोगेन्द्रियां हैं।

आरंभ की दो अपने विषय को बिना स्पर्श किये ही अनुभव कर लेती है और शेष तीन वस्तु से स्पर्श किये बिना ज्ञान नहीं कर सकतीं। आप किसी रस को आंख से लगा दीजिये दिव्य मद हो जायगा। पर किसी वस्तु को जिह्वा पर लगाये बिना आप स्वाद का अनुभव नहीं कर सकते।

अतः इन ५ इन्द्रियों की उपयोग करिये उपभोग नहीं।

इन्द्रियों का विवेचन आपने सुना। क्या हम अपनी इन्द्रियों को उपयोग में न लें। क्या हम कानों में रुई ठूंसलें। क्या हम आंखों पर पट्टी बांधले। क्या हम नाक बंद करदें। नहीं इन की आवश्यक नहीं। इन्द्रियां स्वयं कुछ नहीं करती। इनके साथ हमारा मन जुड़ा रहता है मन के ही योग से ही इन्द्रियों द्वारा हमारी दुर्दशा हो

कृष्ण कोई ऐसे वैसे व्यक्ति नहीं थे। महा योगिराज थे। लोगों ने उन्हें वर्तमान में भगवान माना है और कुछ लोग उन्हें भविष्य में भगवान मानते हैं।

प्रवाह को रोकने से रुकता नहीं इसलिये महापुरुष उसे मोड़ दे देते हैं।

पांडवों ने तुम्बी सहर्ष स्वीकार की। भगवान की तुम्बी को उन्होंने स्वयं भगवान समझा। ६६ तीर्थों में स्नान करने गये। अवंतिका में भी उन्हें आना पड़ा होगा। क्योंकि वह भी तीर्थ स्थान है। सब तीर्थों में उन्होंने स्नान किया और तुम्बी को तो ३—३ बार स्नान कराया। भगवान की भेंट जो ठहरी।

२–४ वर्षों में पांडव लौट कर आ गये। भगवान कृष्ण बड़े प्रसन्न हुए। कहा—पांडवों मुझे बड़ी खुशी है तुमने अपने पापों को धो दिया। पांडव बोले सब आपकी कृपा है।

'ठीक है।' भगवान ने सोचा और कहा— मेरी अमानत कहां है? पांडवों ने कहा महाराज आपकी तुम्बी बड़ी साव-धानी से रखी है। उसे ६६ तीर्थों में ३-३ ४-४ बार स्नान कराया है।

कृष्ण ने तुम्बी ली और एक व्यक्ति को कहा इसे पीस पीस कर लाओ। चूर्ण आया। कृष्ण ने एक चूटकी स्वयं ले कर मुह में डाली। तीर्थ यात्रा का प्रसाद था। सबको एक एक चुटकी दी। पांडवों को भी प्रसाद दिया गया। सबने मुंह में डाला।

कृष्ण इन्द्रिय विजय में समर्थ थे। उन्होने तुम्बी के चूर्ण को हजम कर लिया। पर अन्य लोग उसकी कड़वाहट को बर्दाश्त न कर सके। किसी ने रूमाल में थूका, किसी ने बाहर

भगवान ने फरमाया है :—

'कोहो पीइ पणासेइ ।'

क्रोध प्रेम का सबसे बड़ा शत्रु है। क्रोध आस-पास की शांति को भी खा जाता है।

क्रोध से मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक सौंदर्य नष्ट हो जाता है। क्रोध के दावानल में सर्वस्व स्वाहा हो जाता है।

चीन का सम्राट बड़ा गुणी जन था—प्रजा को उपहार बांटता था। विद्या, राजनीति और वीणा में उसकी बराबरी करने वाला कोई नहीं था। —पर उसमें एक क्रोध का अवगुण था। उसका क्रोध इतना भयानक हो जाता था कि वह दुनिया को डगमगा देता था। क्रोध में वह साक्षात यम का अवतार बन जाता था। क्या मजाल है कि कोई चूं चपड़ भी कर ले।

उसकी सात रानियां—सात महिषियां राजा के क्रोध के मारे परेशान थीं। क्रोधी से कौन प्रेम करे। क्रोध रहे वहां प्रेम का क्या काम ?

वे क्रोधी लोग गद्दार हैं—जिन्होंने घरों में आग लगाकर सारे परिवार की सुख और शांति छीन ली।

राजा के क्रोध के रोग का प्रतिकार रानियों के पास नहीं था—सामन्तों के पास नहीं था—सब दुःखी थे।

मनुष्य अपने प्रयत्नों में कोई कसर नहीं रखता। पर जब वह विवश हो जाता है—तो वह फकीरों, सन्तों, महात्माओं की शरण में जाता है। दुनिया बड़ी मतलबी है।

किसी की हिम्मत नहीं होती थी वह कह दे—राजा से—कि आप क्रोध न करें। जो कहता वही—मृत्यु का मेहमान बन जाता।

गये [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] । इसे चिन्तन हुआ । [illegible] आता । विरोध जागा । जहाँ क्रोध होता है—वहाँ से विचार और विवेक चला जाता है ।

३–४ मिनिट में गुस्सा शान्त हुआ । उनके चेहरे की दशा भी बदली । उनके [illegible] के कारण मेरी यह दशा हो जाती है ।

हैरान हो गया राजा । अपने आप पर लानत भेजने लगा । बुराई को बुराई समझने से बुराई निकल जाती है ।

राख कोयला या मिट्टी खाने की जिसको आदत हो—उसे जरा बाहर थूकने को कह दीजिये । जब वह बाहर थूकेगा तो उसे समझ हो जाएगा कि इतना गन्दा पदार्थ मेरे पेट में जा रहा है ।

तुम्हारी बुराई की नग्नता तुम्हारे सामने नहीं आती । इसी से तुम बुराई करते हो ।

एक मौ वर्ष का फकीर डायरी में लिख गया है—

यदि तुम्हें निन्दा करने का शौक है—खुशी से करो । पर, वह अपनी बुराई की होनी चाहिये ।

यदि तुम्हें प्रशंसा करने का शौक है तो खुशी से करो—पर वह अपने नहीं दूसरे के गुणों की प्रशंसा करो ।

तुम्हारी आत्मा में ब्रह्मतत्व जाग जायेगा । मानसिक दासता को समझो । प्रभु के चिन्तवन में मन लगाओ ।

क्रोध का इतिहास भयंकर है । युद्ध–खून सब क्रोध के परिणाम हैं । लड़ाई का सीन आपने देखा है । जब क्रोध धधक उठता है—तब मनुष्य राक्षस बन जाता है । क्रोध शान्ति का शत्रु है ।

हम जावरा हुसेन टेकरी पर भूतों का ताण्डव देखने गये थे ।

में तो भूत नहीं मिला। मूर्तियां अवश्य मिलीं। पर वे स्वयं इन्सान थीं।

जब क्रोध प्रवेश कर जाता है तब मनुष्य स्वयं भूत बन जाते हैं।

मन सबसे बड़ा भूत है। इस मन के भूत पर सवार हो जाइये। —फिर आप स्वयं आत्म विजयी बन जायेंगे। आप परमात्मा के रूप हैं। क्रोध होता है जहाँ वहां प्यार नहीं होता। और जहां सच्चा प्यार होता है—सच्चा प्रेम होता है—वहां क्रोध नहीं फटक पाता।

आप प्रेम के प्याले को पीकर संसार में शान्ति का समुद्र लहरा दो।

वैदिक-धर्म

भाईयो और बहनो !

आज मैं आपके सामने वैदिक धर्म के सम्बन्ध में विचार रखना चाहता हूं।

अभी आपके सामने जो गीत रखा गया है—उसमें यह बताया गया है कि—

हे इन्सानो ! तुम २४ घन्टों में केवल २ घड़ी भी प्रभु का स्मरण किया करोगे तो तुम्हारी आत्मा में परमानन्द की अनुभूति होगी। परमानन्द की प्राप्ति मनुष्य का सर्वोत्तम ध्येय है। परमानन्द की प्राप्ति के लिये ही सब धर्मों का विधान है।

मैं आज वैदिक धर्म के विषय में कहने जा रहा हूं। वैदिक धर्म संसार की चार मुख्य विचार धाराओं में से एक है। संसार की चार मुख्य विचारधारायें हैं—

(१) हिन्दू, (२) बौद्ध, (३) ईसाई और (४) इस्लाम।

अधिकांश लोग इनमें समाविष्ट हो जाते हैं—

भारत वर्ष में ३ प्रमुख विचार धारायें हैं—१-वैदिक २-जैन और ३-बौद्ध।

वैदिक धर्म का मुख्य उद्देश्य आत्मा के आनन्द की अपेक्षा राष्ट्र की एकता कायम रखने का विशेष है।

धर्म का प्रादुर्भाव और उत्थान भारत में ही क्यों हुआ है ?

आरण्यक और उपनिषदों ने ज्ञान द्वारा मुक्ति का मार्ग अपनाया।

वेदांगियों ने—कल्प, शिक्षा और सूत्र बनाये। सूत्र भी तीन प्रकार के—श्रौत सूत्र, धर्म सूत्र और गृह्यसूत्र।

श्रौत सूत्रों में बड़े-बड़े यज्ञ करने वालों का वर्णन है उन राजाओं और देश नेताओं का वर्णन श्रौत सूत्रों में भरा पड़ा है।

श्रौत सूत्र के रचयिता-आप स्तम्भ बाधायन, आदि हुए।

धर्म सूत्र के रचयिता गौतम आदि हुए। जिन्होंने ब्रह्मचर्य अपरिग्रह, प्रायश्चित्त दान, दया आदि का विधान शास्त्र रचा।

गृह सूत्र संस्कारों के निरूप देते हैं। शारीरिक संस्कार १६ आप लोग १६ मानते हैं। २२ मानसिक संस्कार। पुंसवन, उपनयन आदि अन्त्येष्टि तक शारीरिक संस्कार।

मानसिक संस्कारों में—देव पितृ आचार्य अतिथि आदि की पूजा का विधान है।

उपनिषदों के आधार से दार्शनिक लोग ज्ञान को तर्क से सिद्ध करते हैं। ब्रह्म है—और कुछ नहीं। इस प्रकार बादरायण उसका संकलन करते हैं। अद्वैत वाद की सिद्धि की जाती है।

नमुंवत बनाता है एक-एक दिन सब धर्मों पर कहुंगा। हम क्या म विश्वास देते हैं। यही सबसे बड़ा है।

'सत्यंवद', धर्मंचर' 'स्वाध्यायान् न प्रमदितव्यम्'।

आदि वेद वाक्यों में सबसे बड़ी बात है—अतिथि की जा।

मातृदेवो भव, पितृदेवो भव,
आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव।

मां-बाप और आचार्य का सम्मान करना स्वयं वश भी हो कता है। उनका हम पर ऋण भी होता है। पर अतिथि का न सबसे अधिक मान दिया गया है इसमें हमारी संस्कृति की क महान विशेपता अन्तर्निहित है। आज तो अतिथि को देखकर तने भयभीत होते हैं—गोया कोई भूत प्रेत आगया हो। यही मारी दारिद्रय का स्रोत है।

अतिथि सत्कार की एक कहानी याद आ गई —

योगिराज कृष्ण सन्धि सन्देश लेकर दूत बनकर—पाडवों की ओर से कौरवों की राजसभा में जाते हैं। और प्रस्ताव करते हैं—हे दुर्योधन यद्यपि पांडव आध राज्य के अधिकारी हैं—फिर भी-यदि तुम उनका सम्मान रखने के लिये केवल ५ ग्राम ही दे दोगे तो वे सन्तोष कर लेंगे।

दुर्योधन स्वार्थान्ध था—। अभिमान में अन्धा हो रहा था। उसने कहा—

अरे ग्वाले! गायें चराता चराकर राजनीति में उत्तर आया तू क्या जाने राजनीति को। एक सूच्यग्र भी मैं पाण्डवों को नहीं दे सकता।

श्री कृष्ण! योगिराज कृष्ण! योगिराज कृष्ण! वैदिक

विदुर पत्नी अन्दर गई। कुछ केले पड़े थे। उसने सोचा भगवान की सेवा में यही अर्पण कर दूं। ब्राह्मणी ने केले की फलियां छील कर देने का उपक्रम किया। भाव विह्वल ब्राह्मणी भूल गई कि मैं क्या कर रही हूं। वह फलियां फेंक कर भगवान को छिलके खिला रही है। प्रेम के प्यासे कृष्ण को भी मालूम नहीं कि वह भक्त का प्रसाद कौन है। उसमें तो अपूर्व रस था।

हमारे मेहमानों को आचार-मुरब्बे और मिठाइयों की शिकायत रहती है। वहां कोई शिकायत नहीं थी —

१ केला समाप्त हुआ। दूसरा आया। तीसरा आया। फलियां फेंक दी गई छिलके खिलाये गये विदुर कुटिया में आ रहे हैं। उनकी नजर कृष्ण और ब्राह्णी के अतिथि सत्कार पर पड़ी। वह बोला—ओ मूर्ख ! यह क्या कर रही है ? भगवान को छिलके खिला रही है।" ब्राह्मणी होश में आई।

विदुर ने फलियां देनी शुरू की। कृष्ण बोले विदुर अब तो पेट भर गया।

आप अतिथि सत्कार की इस तस्वीर की ओर देखो। यह है हमारी सभ्यता। खाने और खिलाने में आनन्द की पराकाष्टा इसे कहते हैं।

हिन्दुस्तान के तमाम दर्शन और वैदिक धर्म एक परम सत्ता की ओर ले जाता है। वह बताता है कि वह अपना बर्ताव कैसा करे। पुत्र और पुत्री को समान समझे। नारी जाति का सम्मान करे।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते,
रमन्ते तत्र देवता।

यज्ञ का काम नारी के बिना नहीं हो सकता। वैदिक

[illegible] का उत्थान किया। संकीर्णता को नष्ट किया। मानव पर [illegible] विश्वास पैदा किया। सत्य का पालन अहिंसा बिना नहीं हो सकता। यह उन्हें राजर्षियों से प्राप्त हुई।

धर्म की परम्परा में २ वंश प्रधान हैं। मनु और ईक्ष्वाकु जैन बौद्ध और वैष्णव ईक्ष्वाकु वंश की परम्परा के प्रतीक हैं। [illegible] उसमें आदि मानव है। बृहदारण्यक और पुराण इनके प्रतिपादक ग्रन्थ हैं।

१४ मनु हुए हैं। इनमें से ७ का हमारे संसार से सम्बन्ध है।

मूल रूप में सप्तम मनु के बाद ८वें ऋषभदेव हुए हैं। ये ही आदि पुरुष आदिनाथ या आदम बाबा के नाम से विख्यात हुये हैं और यही एशिया का पहला पुरुष है।

अरब अफगानिस्तान चीन आदि तुम्हारे हैं। पाणिनि अफगान के रहने वाले थे।

इण्डो यूरावियन और इण्डो जर्मनिक की सब भाषाओं की जननि एक है। हमारी सब भाषायें एक मां की बेटियां हैं। यदि आप वेद और वैदिक धर्म को समझना चाहते हैं तो आपको जन्द अवस्ता अरबी, फारसी और संस्कृत का सीखना होगा।

हिन्दुस्तान में हिन्दू मुसलमान अपनी-अपनी सम्प्रदाय की डुगडुगी बजाते हैं। मैं कहता हूं तुम्हारी मूल मां एक है। एक मां की तुम दो सन्तानें हो फिर तुम में मोहब्बत क्यों नहीं।

वैदिक धर्म किसी के प्रति असहिष्णुता का व्यवहार करने की इजाजत नहीं देता। सबको विचार स्वातन्त्र्य है। वेद [illegible]त्ति में अग्नि वैश्वानर इन्द्र आदि सब देव एक देव हैं।

'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।'

यह वेद वाणी है—और

'उदार आत्म शोधन मुक्ति सार।'

ये हेमचन्द्राचार्य का कथन है। उनका उद्देश्य है। सार का सार कथन करते हैं।

शंकर दिग्विजय में एक जगह वर्णन आता है—

शंकराचार्य गंगा स्नान करने गये। स्नान करके वापिस आ रहे थे। एक सकड़ी पुल को पार करना था। सामने से एक शूद्र आ गया। वेद काल में छूआ छूत का विचार नहीं था। ये विचार पुराण काल से आरम्भ हुए।

आजकल आपके यहां चौका धर्म रह गया है। एक व्यक्ति म[illegible] में जाति की रसोई से बाहर खड़ा देख रहा था। उसने कहा सारी जिन्दगी में मेरा धर्म भ्रष्ट नहीं हुआ—आज इस दुष्ट ने मेरा धर्म भ्रष्ट कर दिया।

लोगों ने आश्चर्य से पूछा क्या बात हो गई।

उसने कहा—मैंने मदिरा मांस खाया रंडीबाजी की पर बिना पैर धोये कभी चौके में नहीं गया था आज यह दुष्ट बिना पैर धोये चौके में चला गया।

चौका धर्म रह गया। दिवोदास, पृथु आदि ऋग्वेद के राजा थे। तुम्हारे ऋषि पाराशर किरात था। वह योजन गंधा के पुत्र कौरव और पाण्डव कौन था। छुआछूत कहां है। कहां से आई है। सब अज्ञान की मनोवृत्ति है। उदार बनो।

धर्म हवा पानी और दूध की तरह पवित्र है। हिन्दू हवा और मुस्लिम हवा कहीं सुनी।

ऋग्वेद में इन्द्र, वरुण, सूर्य मित्र आदि ३३ देव माने गये हैं। ये वेद और उपनिषद का पृथक् मानना है। फिर जैसे-जैसे शक्तियाँ अलग-२ देव की कल्पना हुई और ३३३ देव बन गये। यहाँ तक उनकी संख्या ३३ करोड़ तक हो गई।

हिन्दुस्तान में तो ३३ करोड़ हैं यों लोगों ने गाय की पूँछ में ३३ करोड़ देवता माने। इसे कोई असंभव कहे तो उनकी मर्जी। पर उस समय भारत में ३३ करोड़ की आबादी थी उन ३३ करोड़ का जीवन गाय की पूँछ पर ही आधारित था। गोवंश पर ही भारत का कृषि प्रधान जीवन सफल था।

गायों की रक्षा करना राजनीति है सब प्राणियों की रक्षा करने का आदर्श है। धर्म अहिंसा परमोधर्मः वैदिक धर्म का नारा है।

धर्म का मत अहिंसा रूप है। जीव रक्षा और प्राणी दया से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। मनु ने अहिंसा सत्य को धर्म बताया। अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह समाज व्यवस्था के लिये आवश्यक हुये।

गुरु वही जो ज्ञान देकर गुरु ने ज्ञान दिया—तमसो मा ज्योतिर्गमय।

धर्म के दो रूप रहे—यज्ञ और व्रत। दत्तात्रेय के पूर्व हवन आदि को ही बड़ा धर्म माना जाता था—पर दत्तात्रेय, जाबाल आदि ने शास्त्र ही बदल दिया।

जाबाल ने संस्कृति को, महाभारत में द्रौपदी को, अजातशत्रु और जनक के संवाद में ब्रह्म धर्म आदि की जो धारा बहाई है—और जो उपदेश परम्परामयी है—उससे यज्ञ का रूप जीवन की वृत्तियों में आई हुई कलुषितताओं को दग्ध बनाकर जीवन का

विश्व वन्दनीय मुनि

श्री सुशील कुमार जी महाराज

जिन्होंने

अपनी विदेश-यात्रा में

असंख्य युवकों को

अहिंसा और सद् आचरण

की दीक्षा दी

हमारा कोटि-कोटि नमन !

प्रधान । मंत्री ।

सत्यपाल जैन कैप्टन धनराज जैन

यंग फ्रेन्डस एसोशियेसन

जैन नगर, मेरठ ।

कष्ट उठा, जग का हित करते,
सन्त, सुजन, सरिता औ चन्दन।
जग उपकारी, मुनि सुशील के,
चरणों में श्रद्धायुत वन्दन॥

जैन जगत के ज्योतिर्धर है,
विश्वधर्म के है नव प्राण ।
तुमने ऊंचा किया निरन्तर,
भारत भूमि का अभिमान ॥

मुनि सुशील कुमार जी महाराज

के

५२ सप्ताह की विश्व-यात्रा पश्चात स्वदेश आगमन

पर

हार्दिक मंगल कामनाओं

के साथ

चिरंजीशाह राजकुमार

तीर्थंकर महावीर मार्ग, मेरठ ।

तार : महावीर

फोन : ७५५८०-७३१२६ आफिस
७३८४७-७५६२७ फैक्ट्री
७२३१० निवास

मुनि श्री सुशील कुमार जी

को

अ. भा. चौरासिया ब्राह्मण महासभा

की ओर से

स्वदेश वापसी पर

शुभ कामनायें !

बिहारी लाल शर्मा
बी० ए०
जनरल सेक्रेटरी
बाजार सीताराम, दिल्ली

महाराज श्री मुनि सुशील कुमार जी

के

विदेश भ्रमण की वापसी पर

शत् शत् नमन !

प्राणी मित्र

आनन्द राज सुराणा

नई दिल्ली

भारतीय संस्कृति के प्रबल प्रचारक

अहिंसा और सत्य के संदेशवाहक

मुनि श्री सुशील कुमार जी

आधुनिक विवेकानन्द बनें

यही हमारी हार्दिक शुभ कामना है !

शंकर देव

संसद सदस्य

२६, नार्थ एवेन्यु, नई दिल्ली

रचियता :—

- एक विश्व एक सरकार
- उल्टी खोपड़ी
- क्या ईश्वर है ?
- इन्दिरा गांधी समग्र रूप में
- माता निराहारिणी
- मानिक्या योगिनी
- मौलिक आधार [illegible] लिये मौलिक कर्तव्य

[illegible]

हार्दिक अभिनन्दन

कैलाश चन्द जैन
२२, कोटला मार्ग
नई दिल्ली
(विनय नगर)